बहस

क्या मनोविज्ञान कोई विज्ञान है?

कमला मुकंद

मनोविज्ञान का नाम सुनते ही कई लोगों के मन में दढ़ियल मनोचिकित्सकों या सफेद कोट पहने लोगों की छवियां आती हैं जो प्रयोगशाला में चूहों को इधर-उधर दौड़ते देखते हैं। जिस व्यक्ति ने बरसों तक संजीदगी से मनोविज्ञान का अध्ययन किया हो, इन छवियों की बात सुनकर उसका दिल बैठ जाता है। मनोविज्ञान के अलग-अलग विषयों में बहुत विविधता है। पहली विविधता तो यही है कि इनमें अलग-अलग चीज़ों का अध्ययन किया जाता है। इसके अलावा अनुसंधान की विधियों में भी बहुत अंतर होते हैं। मसलन, मानव मस्तिष्क, भेजे और व्यवहार को समझने की कोशिश में मनोवैज्ञानिक अलग-अलग सवाल के संदर्भ में अलग-अलग तरीके अपनाते हैं। कभी-कभी तरीका यह होता है कि भेजे को एक बंद डिब्बा मान लिया जाए जिसके अंदर की प्रक्रियाओं को समझने का एकमात्र रास्ता बाह्य व्यवहार के अवलोकनों पर आधारित है। कभी-कभी मनोवैज्ञानिक लोग भेजे की आंतरिक क्रियाओं का भी अध्ययन करते हैं। जब भेजे की आंतरिक क्रियाओं के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष और अन्य विधियों से प्राप्त निष्कर्ष परस्पर मेल खाते हैं, तो बहुत अच्छा लगता है। एक तीसरा तरीका यह है कि किसी खास व्यवहार का अध्ययन करके यह देखने का प्रयास किया जाए कि वह किस मकसद को पूरा करता है - इसे विकास मनोविज्ञान कहते हैं। अलबत्ता, तरीका जो भी हो सारे ही मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर काम करते हैं।

सवाल यह है कि क्या मनोवैज्ञानिकों के सिद्धांतों को विज्ञानसम्मत कहा जा सकता है। दूसरा सवाल यह है कि क्या वे खोजबीन की वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करते हैं। गहराई में जाएं तो पता चलता है कि इन सवालों के जवाब सीधे-सादे 'हां' या 'ना' में नहीं है। दरअसल इनके जवाब इस बात पर निर्भर होते हैं कि किसी अध्ययन का क्षेत्र क्या है, उस क्षेत्र के किस सिद्धांत पर काम किया जा रहा है और सम्बंधित परिघटना का अध्ययन करने हेतु मनोवैज्ञानिक ने किस तरीके का चुनाव किया है। इन सवालों का जवाब इस बात पर भी निर्भर है कि 'विज्ञानसम्मत' से आपका आशय क्या है। मसलन विज्ञान के दार्शनिक कार्ल पॉपर का मत था कि 'विज्ञानसम्मत' होने का सबसे महत्वपूर्ण मापदण्ड यह है कि क्या उस सिद्धांत या वक्तव्य को गलत साबित किया जा सकता है - इसे वे फाल्सीफाएबिलिटी (झुठलाए जाने योग्य) कहते हैं। अलबत्ता, 'विज्ञानसम्मत' की अन्य परिभाषाएं भी हैं।

सवाल यह है कि क्या मनोवैज्ञानिकों के सिद्धांतों को विज्ञानसम्मत कहा जा सकता है। दूसरा सवाल यह है कि क्या वे खोजबीन की वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करते हैं। गहराई में जाएं तो पता चलता है कि इन सवालों के जवाब सीधे-सादे 'हां' या 'ना' में नहीं हैं।

अनुभव के आधार पर असत्यकरण

एक सच्चा वैज्ञानिक सिद्धांत वह है जिसकी जांच की जा सके। मगर किसी सिद्धांत की पुष्टि में चाहे जितने प्रमाण जुटाए जाएं, उस सिद्धांत को कभी भी पूर्णतः सत्य सिद्ध नहीं किया जा सकता (क्योंकि यह सम्भावना हमेशा बनी रहती है कि भविष्य में कोई प्रतिकूल उदाहरण सामने आ जाएगा)। इसलिए यह माना जाता है कि उसी सिद्धांत को विज्ञान सम्मत कहा जाए जो, कम से कम सिद्धांतन, असत्य साबित करने योग्य हो। यानी कोई तो ऐसा सबूत होना चाहिए जिसके सामने आने पर कहा जाएगा कि वह सिद्धांत गलत है।

फ्रायड द्वारा प्रस्तुत व्यक्तित्व का मनोविश्लेषण